शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अवधी के लोक स्वर

डॉ. बृजेन्द्र कुमार अग्निहोत्री
हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय
गंगटोक, सिक्किम

शोध संक्षेप

लोक शब्द के पर्यायवाची के रूप में शब्द कोशों में कई अर्थ मिलते हैं। जिनमें साधारणत: दो अर्थ विशेष रूप से प्रचलित हैं : इहलोक और परलोक। दूसरा अर्थ होता है जनसामान्य। इसी का हिंदी रूप है लोग। लोक साहित्य लोक जीवन की अभिव्यक्ति है। वह जीवन से घनिष्ठ रूप से सम्बंधित है। प्रस्तुत शोध पत्र में अवधी भाषा में लोक साहित्य के स्वर पर विचार किया गया है।

भूमिका

लोक शब्द अंग्रेजी के फोक (Folk) का पर्यायवाची है। फोकलोर शब्द का निर्माण अंग्रेज पुरातत्वविद विलियम जॉन थामस ने सन 1846 में किया था। इसके पूर्व पापुलर एन्तिक्विटिज शब्द का उपयोग किया जाता था । यूरोपीय विद्वानों में सबसे पहले जॉन आबे ने सन 1687 ई . में सर्वसाधारण जनता के रीति -रिवाज, रहन.सहन , अंधविश्वास और प्रथाओं.कुप्रथाओं का अध्ययन प्रारंभ किया।1

अंग्रेजी भाषा में Folk शब्द एक ओर असंस्कृत शूद्र समाज के लिए प्रचलित है , तो दूसरी ओर इसका प्रयोग सर्व.साधारण के लिए किया गया है। हिंदी में ग्राम तथा जन को भी फोक का पर्याय कहा जाता है। इसी आधार पर फोक लिटरेचर के लिए कहीं -कहीं ग्रा म.साहित्य का प्रयोग मिलता है। किंतु ग्राम शब्द से लोक की समृद्धि का बोध नहीं होता। सिद्धांत कौमुदी में लोक शब्द संस्कृत के लोक.दर्शन धातु से ध प्रत्यय करने पर निष्पन्न हुआ माना गया है। 2 इस धातु का अर्थ है. देखना तथा इसका एक अन्य एकवचन रूप होगा लोकते। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि लोक शब्द का अर्थ हुआ देखने वाला। इस आधार पर वह समस्त जन.समुदाय जो इस कार्य को अर्थात देखने का कार्य करता है, लोक कहलाता है। डॉ . हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है. "लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम नहीं, बल्कि नगरों और गांवों में फैली हुई समूची जनता है , जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं हैं।"3

अवधी भाषा में लोक स्वर

किसी भी भाषा का उत्स उसका लोक होता है। लोक की अपनी परम्पराएँ और संस्कार होते हैं। साहित्य और समाज के उन्नयन में जितना योगदान शिक्षित जन.समुदाय का होता है , उतना ही योगदान अशिक्षित जनसमुदाय का होता है। यह अशिक्षित जनसमुदाय अपने स्मृति कोशों में परंपराओं और संस्कारों को लोक.स्वर के रूप में संरक्षित रखता है। यह समुदाय मौखिक.वाचिक परंपरा द्वारा लोक.स्वर का जीवंत और सजग बनाए रखने का गुरुतर दायित्व निर्वहन करता

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

है। लोक.स्वर के भाषा.वैज्ञानिक अध्ययन से संबंधित क्षेत्र के सामाजिक.राजनैतिक इतिहास की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य के जिस क्षेत्र में मैं पला.बढ़ा , उस क्षेत्र का लोक.स्वर अवधी है । अवधी लोक.स्वर का उदाहरण दृष्टव्य है :

अवध अब अवध नहीं है
क्योंकि जिन्हें होना था अवध में
वे अवध में नहीं हैं।
गाथाएं रहीं अवध में गाथाओं में रहा अवध
कि अवध से एक रास्ता जाता था
जो लौटकर चौदह वर्ष में आता था।
अवध में तपस्वी योगी गुणीजन योद्धा बलशाली अपार
ऋषियों से रहे राजन अवध रहा ऋषियों सा
तब न्याय पर जीता था अवध।
फिर क्या हुआ अवध.....कहाँ गया बल इसका
कहाँ गयीं पादुकाएं .....वचनों की गाथाएं
किन कंदराओं में उतर गए तपस्वी योगी गुणी योद्धा
और किस भय में जी रहे हैं अयोध्यावासी
कि कोई चुनौती नहीं दशानन के लिए।
क्या अवध में शेष सिंहासन षड्यंत्र है
क्या कहा अवध में छल है!
तो खोजो! अवधवासियों!
सिंहासन में छल खोजो!
सरजू में जल अवध में जीवन खोजो!
स्मृतियों में समूचा अवध खोजो!
क्योंकि अवध अब अवध नहीं है।
और जिन्हें होना था अवध में
वे अब अवध में नहीं हैं।।4

इस कविता के माध्यम से कवि ने अवध.क्षेत्र के नूतन और प्राचीन दोनों स्वरूपों को साकार करने का प्रयास किया है।

जिस तरह वर्तमान समय में अंग्रेजी भाषी व्यक्ति हिंदी भाषी व्यक्तियों को हेय.दृष्टि से देखता है , उसी तरह अवधी व अन्य क्षेत्रीय लोक.स्वरों को संबल देने वाले भाषा -भाषी व्यक्तियों को हिंदी.भाषी व्यक्ति हीन.दृष्टि से देखता है। इसी का परिणाम है कि हिंदी परिक्षेत्र से हिंदी को सुदृढ़ आधार प्रदान करने वाले अवधी और ब्रज.भाषियों की संख्या में दिनोंदिन कमी आती जा रही है।

अवधी लोक.स्वर की ध्वनि लोकगाथा , लोकनाट्य, लोककथा , लोक.सुभाषित , लोक.प्रहेलिका, लोक.नृत्य और लोक.संस्कृति को परिलक्षित कर सुना जा सकता है। विविध लोक.क्षेत्रों की तरह अवधी लोकगाथाओं का संसार बहुरंगी है। अवधी लोकमानस लोकनायकों की चारित्रिक लीलाओं को गेय कथात्मक धरातल पर प्रस्तुत करके उनको लोकगाथा बना देता है। लोकगाथा की प्रस्तुति में कथाए गीत और नृत्य की त्रिवेणी प्रवाहित होती है। जीवन और जगत के प्रेरक.प्रसंग लोकगाथा के उपजीव्य होते हैं। यह दृश्य और श्रव्य विधा का उदात्त समन्वय है। इसी तरह अवधी लोकमानस की भावनाओंए आस्थाओंए मान्यताओं और वर्जनाओं की रंगमंचीय प्रस्तुति लोकनाट्य कहलाती है। अवधी लोकनाटकों में व्यावसायिकता तथा पांडित्य.प्रदर्शन का भाव न होकर लोक.अनुरंजन का प्रयोजन ही प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होता है। अवधी लोकनाटकों में कठपुतलीए स्वांगए ख्यालए नौटंकीए बहुरूपियाए भांड -भंडैती और रामलीला आदि प्रमुख हैं।

एक सोहर.गीत की पंक्तियाँ देखिये

सबका तौ तुम सब कुछ दीन्हयो हमका बेकार
परदे भीतर जच्चा बोलीए सुनु राजा मोरी बात
तुम का तो मैं सब कुछ दीन्हयों

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बंस उजागर कीन्ह्यों
बाबाजी को नाम दीन्ह्योंए दीन्ह्योंहौं लाल।।5
लोक.स्वर सामाजिक कुरीतियों को उजागर करने में आगे रहा है। पुत्र.जन्म में उत्सव और पुत्री.जन्म में शोक घाघ की लोकोक्ति के रूप में देखा जा सकता है :
नसकट खटिया बतकट जोय
जो पहिलौठी बिटिया होय।
पातर कृषी बौरहा भाय
घाघ कहैं दुःख कहाँ समाय।।6
पुत्रीके जन्म पर न तो किसी में उत्साह दिखाई देता है और न ही कोई उत्सव मनाया जाता है। यहाँ तक कि सोअहर.सरिया गाने के लिए आई हुई पड़ोस की स्त्रियाँ बिना गाये ही एक.एक कर खिसक जाती हैं। कन्या की माता अकारण ही स्वयं को अपराधिनी मानने लगती है। एक लोकगीत में देवी से जिस प्रकार विनती की गई है, उससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक मनोवृत्ति कन्या के पक्ष में नहीं थी :.
मांग्यो बड़ा दानु देवी के मंडीलवा भीतर।
अरी मांग्यो मैं हरी.हरी चुरियाँ सेंदुरा भरी मांग।
अरी मांग्यो मैं पांच.सात भैया बहिन अकेलि।
अरी मांग्यो मैं पांच.सात देवरा ननदि अकेलि।।7
इसी तरह तत्कालीन परिवेश में व्याप्त अन्य सामाजिक बुराइयों की ध्वनि अवधी लोक.स्वर में सहजता से सुनी जा सकती हैं। दहेज़.प्रथा , सती.प्रथा, बाल.विवाह, जाति-व्यवस्था का जीवंत रूप अवधी लोक.स्वरों में उपलब्ध है। अवधी लोक.स्वरों की कुछ कहावतें दृष्टव्य हैं.:
अब पछताये होत का
जब चिड़िया चुग गई खेतु।
आठ गाँव के चौधरी, बारह गाँव के राव।
आपन काम न आवें, तौ ऐसी.तैसी मा जाय।
उत्तम खेती मध्यम बान
निखिद चाकरी भीख निदान।
ऊँट हेरान मटुका मा ढूँढें।
एकु हाथे तारी नाहीं बाजत।
कहे ते धोबी गदहा मा नाहीं चढत।
खेती, पाती, बीनती औ घोड़े के तंग,
आपन हाथ संवारिये लाख लोग होय संग।
गुजरा गावहु औ लौटा बाराती,
कोऊ नाहीं पूँछत।
चारि कौर भीतर तब देव औ पीतर।
जापर जाकर सत्य सनेहू
सो तेहि मिलत न कछू संदेहू।
इस तरह हम देखते हैं कि लोक का स्वर जीवन और जगत के प्रत्येक क्षेत्र को अपनी आवाज प्रदान करके जीवंतता प्रदान करता है। हिंदी साहित्य में ख्यातिलब्ध ग्रंथ रामचरितमानस के रूप में अवधी का लोक.स्वर अपनी महत्ता को स्थापित करने के लिए पर्याप्त है। अवधी लोक.स्वर की रसात्मकता किसी भी सहृदय को द्रवित करने में समर्थ है। लोकमानस में व्याप्त विविध विषयक लोक.स्वर देखिये.
(क) पुराण विषयक
1. पीसे क अकराए
गावै क सीता हरन।
2. देविन की देह जरेए
पूत मांगे भोंपा।
3. का सरग मा दिया देखे हौ
(ख)। लोकविश्वास विषयक
1. अंग फरकै लाग
2. कउआ ब्वालति हवे
3.अहिरै के पड़वा हौ।
(ग) भाग्य विषयक
1.कहूं जाव करमौ साथे जई।
2.भीख नाहीं देवौ
का त्वांबौ फोरि लेहौ

(घ) नीति विषयक

1. आँखी का पानी मरिगा हवे

2. काल्हि का लीपा गवा बिलाय

आज का लीपा दयाखौ आय।

(ड) सामाजिक जीवन विषयक

1.भूखन के मारे कंडा होइगे

2. गरीबी मा आटा गीला

3.गगरी मा दानाए सूत उताना

निष्कर्ष

सारांशतः लोक के स्वर के माध्यम से हम अपने देश और समाज की जाग्रत परंपराओं और संस्कारों की पहचान करते हैं , जो केवल हिंदी और अंग्रेजी के माध्यम से संभव नहीं है। इसके लिए हमें इन क्षेत्रीय लोक.स्वरों के अलिखित साहित्य को प्रकाश में लाने की आवश्यकता है।

संदर्भ.ग्रन्थ

1 इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ सोशल साइंसेज , जिल्द: 5 पृष्ठ.288

2 सिद्धांत कौमुदी, वेंकटेश्वर प्रेस मुंबई, पृष्ठ.417

3 जनपद, त्रैमासिक पत्रिका , लोकसाहित्य का अध्ययन, प्रवेशांक, पृष्ठ.66

4 कादंबरी, नवंबर 2007, पृष्ठ.48

5 अवधी लोक साहित्य ग्रंथावली. डॉ . इंदुप्रकाश पाण्डेय, पृष्ठ.108

6 अवधी लोक साहित्य ग्रंथावली , डॉ . इंदुप्रकाश पाण्डेय, पृष्ठ.112

7 अवधी लोक साहित्य ग्रंथावली , डॉ . इंदुप्रकाश पाण्डेय, पृष्ठ.112